# हिमाचल प्रदेश विधान सभा

विधान सभा की बैठक सोमवार, दिनांक 16 नवंबर, 2026 को माननीय अध्यक्ष, श्री कुलदीप सिंह पठानिया की अध्यक्षता में विधान सभा भवन, तपोवन, धर्मशाला-176215 में 02.00 बजे अपराह्न आरम्भ हुई।

**16.11.2026/1400/ए0पी0/ए0जी0/-01**

**अध्यक्ष :** शीतकालीन सत्र में भाग लेने के लिए मैं इस माननीय सदन के समस्त सदस्यों का अभिनंदन करता हूं और आभार व्यक्त करता हूं। विशेष तौर पर सदन के माननीय नेता श्री सुखविन्दर सिंह सुक्खू जी, माननीय उप-मुख्यमंत्री श्री मुकेश अग्निहोत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री जय राम ठाकुर जी, मंत्रिमंडल के समस्त सदस्यों एवं सभी माननीय विधायकों का अभिनंदन करता हूं। जैसा कि आप जानते हैं कि यह चौदहवीं विधान सभा का तेरहवां सत्र है और मैं आशा करता हूं कि छह दिन तक चलने वाले इस सत्र में सत्ता पक्ष एवं विपक्ष के सभी माननीय सदस्यों का सहयोग मुझे मिलता रहेगा। मुझे उम्मीद है कि सभी माननीय सदस्य हिमाचल प्रदेश विधान सभा की गरिमा एवं परंपराओं का सम्मान करते हुए तथा नियमों की परिधि में रहकर जनहित से संबंधित विषयों पर सदन में सार्थक चर्चा करेंगे और

**श्री ए0टी0 द्वारा जारी .....**

**16.11.2026/1405/AT/AG /01**

**अध्यक्ष जारी....**

सदन के संचालन में मुझे आप सभी का रचनात्मक सहयोग प्राप्त होगा। इससे पूर्व कि आज की कार्यवाही आरंभ करें, मेरा सभा मंडप में उपस्थित सभी माननीय सदस्यों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों से निवेदन है कि वे राष्ट्रगान के लिए अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाएं।

**(राष्ट्रगान गाया गया)**

**अध्यक्ष :** जैसा कि आप जानते हैं कि पिछले सत्र और इस सत्र के बीच के अंतराल में हमारे इस माननीय सदन के एक पूर्व सदस्य श्री विजय सिंह मनकोटिया जी एवं वर्तमान सदस्य, श्री नंद लाल जी का निधन हुआ है। इसलिए मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदय से अनुरोध करूंगा कि वे पूर्व सदस्य स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया तथा वर्तमान विधान सभा सदस्य स्वर्गीय श्री नंद लाल जी के निधन पर शोकोद्गार प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

## शोकोद्गार

**मुख्य मंत्री** : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि पूर्व मुख्य संसदीय सचिव श्री नंद लाल जी का 3 नवंबर, 2026 को 72 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

स्वर्गीय श्री नंदलाल जी का जन्म 16 अप्रैल, 1954 को जिला शिमला के गांव देवठी, रामपुर बुशहर में हुआ था। उन्होंने बी0ए0 तक की शिक्षा प्राप्त की थी। स्वर्गीय श्री नंदलाल जी ने आई0टी0बी0पी0 अकादमी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद कमांडो दल में शामिल हुए। उन्होंने वर्ष 1982 में एशियाई खेलों, वर्ष 1983 में गुटनिरपेक्ष सम्मेलन तथा वर्ष 1984 में राष्ट्रमंडल सम्मेलन जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के सुरक्षा प्रबंधन में अहम भूमिका निभाई।



वर्ष 1985 में एस0पी0जी0 में कार्य करते हुए उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्रियों की सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान निभाया। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी एवं श्री चंद्रशेखर जी द्वारा उन्हें प्रशंसा पत्र प्रदान किए गए।

उन्होंने जम्मू-कश्मीर के अत्यधिक उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में आई0टी0बी0पी0 बटालियन की कमान भी संभाली। वर्ष 2001 में उन्हें उग्रवाद के विरुद्ध लड़ाई तथा उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दो बार राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा भी उन्हें राज्य की सुरक्षा एवं विकास में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

स्वर्गीय श्री नंद लाल जी ने वर्ष 2027 में केंद्रीय सरकारी सेवाओं से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के उपरांत जिला शिमला के रामपुर विधान सभा क्षेत्र से चुनाव लड़ा तथा हिमाचल प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए। वे वर्ष 2012, 2017 एवं 2022 में पुनः विधायक चुने गए।

**श्री टी0सी0वी0 द्वारा जारी .....**

**16.11.2026/1410/टी0सी0वी0/ए0एस0-1**
**शोकोद्गार .... जारी मुख्य मंत्री ..... जारी**

वे दिनांक 23 मई, 2013 से 20 दिसंबर, 2017 तक प्रदेश सरकार में मुख्य संसदीय सचिव रहे।

स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी की समाज सेवा में विशेष रुचि थी। वे सदैव निष्ठा, ईमानदारी और जनसेवा के प्रतीक रहे। यह माननीय सदन स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी द्वारा प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए यह माननीय सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

अध्यक्ष महोदय, उनकी मृत्यु से पहले मुझे उनके विधान सभा क्षेत्र में जाने का अवसर मिला। मैं उनके गांव देवठी तथा रामपुर क्षेत्र के अंतिम छोर पर स्थित काशापाट भी गया था। उस समय उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। वहां शिलापट्टिकाओं का उद्घाटन और शिलान्यास होना था। जब मैंने उनकी स्थिति देखी तो उनसे अनुरोध किया कि वे घर पर ही रहें, लेकिन उनकी इच्छा कार्यक्रम में जाने की थी लेकिन मेरे बार-बार अनुरोध करने के बाद वे रुक गए। जब उनका निधन हुआ उस समय मैं चमियाणा अस्पताल गया था। मुझे रात को दिल्ली में पता चला कि उनका ब्लड प्रैशर बहुत कम हो गया है और उसे सामान्य करने के लिए उन्हें चमियाणा शिफ्ट करना पड़ेगा। हमने तुरंत प्रभाव से उन्हें चमियाणा शिफ्ट करवाया। जब मैं उनसे मिलने गया तो उस समय उनका ब्लड प्रेशर ठीक था लेकिन उनके अन्य अंग फेलियर की ओर बढ़ रहे थे। मैंने डॉक्टरों से प्रार्थना की कि यदि किसी भी प्रकार से उनकी जान बचाई जा सकती है तो इसके लिए पूरी कोशिश की जाए। डॉक्टरों की पूरी टीम लगातार उनका उपचार करती रही लेकिन अचानक सुबह साढ़े पांच बजे वे हम सबको छोड़कर चले गए।

इस विधान सभा में वे कई वर्षों तक विभिन्न सदनों के सदस्य रहे। वे सदन में ऐसे सवाल उठाते थे जिनसे किसी को हानि न पहुंचे। उनका व्यक्तित्व बहुत अच्छा था। वे बड़े सहज और सरस स्वभाव के व्यक्ति थे तथा अपनी बात पूरी स्पष्टता और एकाग्रता के साथ रखते थे। आज हमारे बीच से एक ऐसे विधायक की कमी हुई है जिन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर भगवान के चरणों में स्थान प्राप्त किया है। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने का आत्मबल प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा की शांति के लिए हम सब सदन की ओर से उनके परिवार को शोक प्रस्ताव भेजें।

अध्यक्ष महोदय, मुझे इस माननीय सदन को यह सूचित करते हुए भी दुःख हो रहा है कि पूर्व मंत्री श्री विजय सिंह मनकोटिया जी का दिनांक 29 सितंबर, 2026 को 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। यह माननीय सदन उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करता है।

स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी का जन्म दिनांक 23 नवंबर, 1939 को जिला कांगड़ा के गांव त्यारा में हुआ था। उन्होंने भारतीय सेना अकादमी, देहरादून से स्नातक शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 1960 में उनका भारतीय सेना अकादमी के लिए चयन हुआ तथा वर्ष 1962 में विशिष्ट कार्य निष्पादन एवं योग्यता के लिए उन्हें स्वॉर्ड ऑफ ऑनर तथा स्वर्ण पदक के साथ सेना में नियुक्ति मिली। वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध तथा उसके बाद वर्ष 1965 और वर्ष 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध हुए युद्धों में उन्होंने गोरखा रेजिमेंट्स के साथ कार्य किया। उन्होंने रॉयल भूटान आर्मी के साथ भूटान में चार वर्ष तक सेवा की। उन्होंने वर्ष 1976 में भारतीय सेना से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली तथा वर्ष 1982 में पहली बार जिला कांगड़ा के शाहपुर विधान सभा क्षेत्र से वे हिमाचल प्रदेश विधान सभा के लिए निर्वाचित हुए थे। वे वर्ष 1985, 1990, 1993 व 2003 में पुनः विधायक चुने गए। वे वर्ष 1995-98 तथा मार्च, 2003 से दिनांक 6 जुलाई, 2004 तक हिमाचल प्रदेश सरकार में पर्यटन, नागरिक उड्डयन एवं विधि मंत्री भी रहे।

स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी की समाज सेवा में विशेष रुचि थी। यह माननीय सदन स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी द्वारा प्रदेश तथा समाज के लिए की गई सेवाओं की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करते हुए

यह सदन ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा उनके परिजनों को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है।

**16.11.2026/1410/टी0सी0वी0/ए0एस0-3**

**अध्यक्ष :** अब माननीय नेता प्रतिपक्ष दिवंगत आत्मा के प्रति शोकोद्गार व्यक्त करेंगे।

**श्री जय राम ठाकुर :** अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने जो शोक प्रस्ताव इस माननीय सदन में प्रस्तुत किए हैं, मैं भी उन भावनाओं के साथ खड़ा हूं। पिछले सत्र और इस सत्र के बीच हमारे दो वरिष्ठ साथी जो इस माननीय सदन के सदस्य रहे और लंबे समय तक सदन में रहे, आज हमारे बीच नहीं हैं।

**एन0एस0 द्वारा ... जारी**

16-11-2026/1415/NS-AS/1

शोकोद्गार -----जारी

श्री जय राम ठाकुर-------जारी

मैं समझता हूं कि यह भी एक इत्तेफाक है कि दोनों ऐसी पर्सनैलिटीज थीं जिन्होंने देश की सुरक्षा में अपने जीवन का बहुत बड़ा समय देकर अपनी सेवाएं दी थीं। मैं स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी की बात करता हूं जिनका जन्म 16 अप्रैल, 1954 को हुआ था। वे एक सामान्य ग्रामीण पृष्ठभूमि से संघर्ष के उस दौर में से निकले जिन्होंने अपनी पढ़ाई ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल में की। संघर्ष करके गांव का ये व्यक्ति आगे बढ़ते हुए यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के बाद आई0टी0बी0पी0 में अपनी सेवाएं देने के लिए शामिल हुए। उन्होंने आई0टी0बी0पी0 में जिस लगन और निष्ठा के साथ अपना काम किया तो उस बात को मुख्य मंत्री जी ने भी यहां अपने शब्दों में रखा कि बतौर एक अधिकारी के रूप में उन्होंने प्रधानमंत्री की सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे वर्ष 1985 में एस0पी0जी0 का हिस्सा बने और उन्हें उनकी सेवाओं के लिए पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी जी व श्री चंद्रशेखर जी ने भी सम्मानित किया। यही नहीं, मैं इस बात को भी कह सकता हूं कि हमारे

देश के डिप्टी प्राइम मिनिस्टर आदरणीय श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी जिनके पास होम मिनिस्टर का दायित्व भी था उन्होंने भी उनकी सेवाओं के लिए उन्हें सम्मानित किया है। वे अपनी ईमानदारी के लिए सेना में भी जाने जाते थे। बहुत कठिन दौर में जब जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद चरम सीमा पर था उस समय वे आतंकवाद के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में भी शामिल हुए जहां उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अध्यक्ष महोदय, मैं उनके परिवार से मिलने के लिए उनके गांव देवठी गया था। परिवार के सदस्यों ने भी कई बातों का जिक्र किया कि उन्होंने अपने जीवन में ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम करते हुए समाज में किस प्रकार आगे बढ़ सकते हैं, वे इसके बारे में भी बताते रहते थे। वे इस माननीय सदन के चार बार सदस्य रहे। जब मुझे मालूम पड़ा कि वे अस्वस्थ हैं और आई0जी0एम0सी0 अस्पताल में एडमिट हैं तो मैं व्यक्तिगत रूप से उनसे मिलने के लिए वहां भी गया था। उस दौरान परिवार के सदस्यों से भी मुलाकात हुई थी। उस वक्त उनका यही कहना था कि थोड़ी-सी

16-11-2026/1415/NS-AS/2

परेशानी है लेकिन बहुत जल्दी ठीक होकर वापस आऊंगा। हम भी इसी उम्मीद के साथ बैठे थे कि वे जल्दी स्वस्थ होकर वापस आएंगे लेकिन धीरे-धीरे हमें मालूम पड़ा कि उनके स्वास्थ्य में बहुत बड़ा सुधार नहीं हो रहा है। बीच में सुधार हुआ था लेकिन बाद में उनका स्वास्थ्य लगातार गिरता गया। ऐसी परिस्थिति में वे पीड़ा के दौर से गुजरते हुए इस दुनिया से विदा हो गए।

आर0के0एस0 द्वारा-------जारी

16.11.2026/1420/RKS/DC-1

शोकोद्गार जारी....

श्री जय राम ठाकुर... जारी

मैंने अपने जीवन में यह देखा है कि हम सदन के अंदर जनप्रतिनिधि के नाते अपनी भूमिका निभाते हैं। जनप्रतिनिधि होने के साथ-साथ हम राजनीतिक दल का भी प्रतिनिधित्व करते

हैं। जब हम राजनीतिक दल का प्रतिनिधित्व करते हैं तो स्वाभाविक रूप से हम अपने संगठन और पार्टी की विचारधारा के अनुरूप अपना पक्ष रखने की कोशिश करते हैं। इस दौरान कई बार दोनों तरफ से तल्खी भी हो जाती है क्योंकि हमें अपना पक्ष रखना होता है और सामने वाले सदस्य को अपने दल का पक्ष रखना होता है। जब हम अपने-अपने पक्ष रखते हैं तो वैचारिक मतभेद भी सामने आते हैं और स्वाभाविक रूप से कई बार उनमें तल्खी भी आ जाती है। लेकिन मैंने श्री नन्द लाल जी को सदन के अंदर एक विशुद्ध जनप्रतिनिधि के रूप में अपनी बात रखते हुए देखा है। मैंने कभी उन्हें सदन में कांग्रेस पार्टी का पक्ष रखते हुए नहीं देखा। वे सदन के अंदर जब भी अपनी बात रखते थे तो एक जनप्रतिनिधि के नाते प्रदेश और अपने क्षेत्र की समस्याओं का उल्लेख करते थे। उनकी बातों में एक विशेष बात यह रहती थी कि वे अपनी बात रखने के साथ-साथ महत्वपूर्ण सुझाव भी देते थे। उनकी बातें सीधी, स्पष्ट और सटीक होती थीं और सुनने योग्य होती थीं। मैं समझता हूं कि उनकी यह एक अलग छवि थी और उनके जीवन से हम सभी को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मैंने कभी उन्हें राजनीतिक दृष्टि से किसी का विरोध करते हुए या किसी के खिलाफ टिप्पणी करते हुए नहीं देखा। वे हमेशा एक जनप्रतिनिधि के नाते अपने क्षेत्र की समस्याओं की बात कहते थे। उनके जीवन से हम सभी को बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उनके निधन से इस सदन के साथ-साथ उनके परिवारजनों और उनके क्षेत्र के लोगों को भी गहरा दुःख पहुंचा है। हमने अपना एक ऐसा साथी खोया है जो सहज और सरल स्वभाव के थे और अपनी बात को सदन में प्रभावी ढंग से रखते थे। वे अपने क्षेत्र की जनता के लिए पूरी निष्ठा से कार्य करते थे। मैं उनके निधन पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। उन्होंने देश की सेवा करते हुए एक अधिकारी के रूप में अर्धसैनिक बल आई0टी0बी0पी0 में अपनी सेवाएं दीं। मैं उस नाते भी उनकी प्रशंसा करता हूं। एक जनप्रतिनिधि के नाते उन्होंने जिस प्रकार अपनी विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और अपने क्षेत्र की जनता की आवाज को सदन में रखा उसके लिए मैं उन्हें नमन करता हूं। मेरी संवेदनाएं शोक संतप्त परिवार के साथ हैं। ईश्वर उन्हें

16.11.2026/1420/RKS/DC-2

इस अपार दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। मेरा निवेदन है कि मुख्य मंत्री द्वारा इस माननीय सदन में शोकोद्गार के रूप में जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है उसमें हमारी संवेदनाएं व संदेश भी सम्मिलित किया जाए।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार मैं एक विशिष्ट व्यक्तित्व स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी का भी उल्लेख करना चाहूंगा जिनकी अपनी एक अलग पहचान और छवि थी। उनका जन्म दिनांक 23 नवंबर, 1939 को हुआ था। उनके अचानक निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। मैं इस संबंध में अवश्य कहना चाहूंगा कि उनका व्यक्तित्व ऐसा था जिसे दूर से ही पहचाना जाता था। उनके चेहरे पर एक विशेष चमक और व्यक्तित्व में एक अलग आकर्षण था जिसके कारण उनकी अपनी विशिष्ट पहचान थी।

श्री बी0एस0द्वारा जारी

16.11.2026/1425/बी.एस./डी.सी.-1

शोकोद्गार जारी...

श्री जय राम ठाकुर जारी...

इसके साथ-साथ उनकी एक अलग छवि भी थी। वे भ्रष्टाचार के खिलाफ और गलत बात के खिलाफ आवाज उठाने में कभी पीछे नहीं हटते थे। चाहे उसका नुकसान उन्हें हो या किसी दूसरे व्यक्ति को हो। इन सभी बातों की परवाह किए बिना वे निर्भीक होकर अपनी बात रखते थे। यह उनकी एक अलग विशेषता थी। ऐसे एक नहीं बल्कि अनेकों महत्वपूर्ण विषय रहे जिन पर उन्होंने अपनी बात रखी। कई बार उनके विचारों को लेकर बहुत सारी कंट्रोवर्सीज भी हुईं लेकिन इसके बावजूद वे निर्भीक होकर अपनी बात कहते रहे। वे भारतीय सेना में एक अधिकारी के रूप में रहे। उन्हें मेजर साहब के नाम से जाना जाता था। मेजर श्री विजय सिंह मनकोटिया जी का चयन वर्ष 1962 में भारतीय सेना में हुआ था। इसके बाद वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध और वर्ष 1965 और 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध युद्धो में भी उनकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने रॉयल भूटान आर्मी के साथ भूटान में 4 वर्ष तक सेवाएं दी। वर्ष 1976 में उन्होंने भारतीय सेना से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली।

अध्यक्ष महोदय, मैं जिस बात का जिक्र कर रहा हूं वह यह है कि हमारे ये दोनों साथी जो इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं उन्होंने देश की सेवाओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। एक आई0टी0बी0पी0 में रहे और दूसरे भारतीय सेना में रहे और दूसरी बात यह भी महत्वपूर्ण है कि दोनों ने बी0आर0एस0 लिया और अपनी नियमित सेवा पूरी होने से पहले ही सेवाएं छोड़कर एक जनप्रतिनिधि के रूप में इस माननीय सदन में अपनी सेवाएं दीं। मेजर श्री विजय सिंह मनकोटिया जी इस इस माननीय सदन के 5 बार सदस्य रहे और एक बार मंत्री भी रहे हैं।

राजनीतिक दृष्टि से उनका जीवन उतार-चढ़ाव भरा रहा है इसमें दो राय नहीं है। अलग-अलग राजनीतिक दलों से भी उनका नाता रहा। कभी निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में भी चुनाव लड़े लेकिन इसके बावजूद चुनाव लड़ना और संघर्ष करना उनके जीवन का एक बहुत बड़ा मकसद था। जिस उद्देश्य को लेकर वे हमेशा संघर्षरत रहे वह उनकी एक अलग पहचान थी। यह एक विशेष बात है जो मैं उनके बारे में जानता हूं। दिनांक 29 सितंबर, 2026 को उनका दुखद निधन हुआ। मैं अपने साथियों के साथ उनके परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए उनके निवास पर गया था।

16.11.2026/ 1425/बी.एस./डी.सी.-2

ऐसे में मैं यही कहना चाहूंगा कि हमारे दोनों साथी जो पूर्व में इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं उनके जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। उनके इस दुनिया से चले जाने के पश्चात समाज को और उनके परिवार को जो बहुत बड़ी क्षति हुई है उसकी पूर्ति करना संभव नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं मेजर श्री विजय सिंह मनकोटिया जी के निधन पर मैं अपने दल की ओर से भी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए शोक प्रकट करता हूं। उनके परिवारजनों तक इस माननीय सदन के माध्यम से और आपके माध्यम से हमारा यह संदेश पहुंचे। मैं ऐसी प्रार्थना और आग्रह करता हूं। दोनों दिवंगत माननीय सदस्यों के प्रति अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

**अध्यक्ष :** शिक्षा मंत्री जी शोकोद्गार में भाग लेंगे। ...( interruption)... I request Hon'ble Member Shri Vinay Kumar ji to take his seat at this moment. Hon'ble Member Shri Vinay Kumar ji, please take your seat at this moment.

**शिक्षा मंत्री :** अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने यहां जो शोक उद्गार प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, मैं भी अपने आपको उससे संबद्ध करता हूं। जैसा कि नेता प्रतिपक्ष श्री जय राम ठाकुर जी ने कहा कि हमारे प्रदेश ने इस अवधि के दौरान अपने दो वरिष्ठ राजनेताओं को खोए हैं जो निरंतर कई बार इस माननीय विधान सभा के सदस्य रहे हैं।

श्री डी0टी0 द्वारा जारी...

**16.11.2026/1430/डी0टी0/एच0के-1**
**शिक्षा मंत्री ..... जारी**

चौथी बार विधान सभा में आना कठिन होता है लेकिन इन्होंने लगातार 4 मर्तबा अपने-अपने विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया है।

अध्यक्ष महोदय, जब मैं इन दोनों नेताओं के व्यक्तित्व को देखता हूं तो चाहे नन्द लाल जी की बात करें या मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी की, दोनों में कई समानताएं दिखाई देती हैं। दोनों ने अपनी मातृभूमि के लिए आर्म्ड फोर्सिज में योगदान दिया और प्रदेश की सेवा करने का अवसर मिलने पर भी अपना बहुत बड़ा योगदान दिया। ईमानदारी के प्रति भी दोनों नेताओं की अपनी अलग क्रेडिबिलिटी रही है।

अध्यक्ष महोदय, नन्द लाल जी हमारे जिला शिमला के वरिष्ठ नेता थे। एक ही विधान सभा क्षेत्र से 4 मर्तबा जीतना अपने आप में बहुत बड़ी बात है। वे विभिन्न पदों पर रहे। जैसा कि मैंने पहले कहा कि वे आर्म्ड फोर्सिज में रहे और उन्होंने कमांडो के रूप में भी कार्य किया। वे आई0टी0बी0पी0 में रहे और जब उन्होंने वॉलंटरी रिटायरमेंट ली तब वे डी0आई0जी0 के पद पर थे। इसी तरह

वे 4 मर्तबा विधायक रहे। हम एक साथ चीफ पार्लियामेंटरी सेक्रेटरी रहे और वे फाइनेंस कमीशन के चेयरमैन भी रहे। वे बहुत ही सच्चे, पक्के और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी क्षति बहुत बड़ी है। यह क्षति मात्र हमारे रामपुर विधान सभा क्षेत्र की नहीं है बल्कि पूरे प्रदेश ने एक अच्छा नेता खोया है। उनके साथ मेरे बहुत अच्छे व्यक्तिगत संबंध रहे।

अध्यक्ष महोदय, कई मर्तबा अंतिम समय में मैं, श्री कुलदीप सिंह राठौर जी और श्री मोहन लाल ब्राक्टा जी उनसे मिलने गए थे। उनका फौजी बैकग्राउंड था और उनमें यह भावना थी कि मैं इस बीमारी से बाहर निकलूंगा। वे पिछले कई वर्षों से इस बीमारी से जूझ रहे थे। मुझे याद है कि उनके निधन से एक दिन पहले जब मैं उनसे मिलने चमियाणा गया था तो वे कोमा में थे। उनकी धर्मपत्नी जी से मेरी बात हुई थी। उस समय भी उनके मन में यही था कि धर्मशाला में चल रहे हमारे इस सेशन में मैंने भाग लेना है। निश्चित रूप से यह हमारे प्रदेश की बहुत बड़ी क्षति है।

**16.11.2026/1430/डी0टी0/एच0के-2**

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी भी हमारे एक कद्दावर नेता थे। वे 5 मर्तबा अपने विधान सभा क्षेत्र से विधायक रहे और 2 मर्तबा मंत्री भी रहे। उनका संबंध बिशप कॉटन स्कूल से रहा है, जहां से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की थी। वहां से हम भी 5-6 विधायक चुनकर आए हैं। वे दून स्कूल, देहरादून से पढ़े थे और बड़े मेरिटोरियस स्टूडेंट थे। उनके स्वभाव में एक फाइटर के रूप में उनकी अलग छवि रही। जहां हमारे नन्द लाल जी सरल स्वभाव और मृदुभाषी व्यक्ति थे, वहीं मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी की भी अपनी अलग पहचान और छाप रही है।

अध्यक्ष महोदय, निश्चित रूप से इन दोनों नेताओं के निधन से हमारे प्रदेश को बहुत बड़ी क्षति हुई है। जो यह शोकोद्गार प्रस्ताव यहां लाया गया है उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उनकी दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें तथा उनके परिवारजनों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति दें। मैं यही कहना चाहूंगा।

**अध्यक्ष :** अब माननीय सदस्य श्री बलबीर सिंह वर्मा जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

**श्री बलबीर सिंह वर्मा :** अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री महोदय द्वारा इस माननीय सदन में प्रस्तुत किए गए शोकोद्गार प्रस्ताव में मैं भी स्वयं को सम्मिलित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी ने सर्वप्रथम आई0टी0बी0पी0 में अपनी सेवाएं दीं। आई0टी0बी0पी0 में सेवाएं देते हुए उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके उपरांत उन्होंने प्रधान मंत्री की सुरक्षा के लिए गठित एस0पी0जी0 में भी लंबे समय तक अपनी सेवाएं दीं। वहां भी उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी वर्ष 2007, 2012, 2017 और 2022 में लगातार 4 बार

**श्री एन0जी0 द्वारा जारी...**

रामपुर विधान सभा क्षेत्र से विधायक बने हैं। इस माननीय सदन में और अपनी जनता के साथ उनका जो व्यवहार था, वह बहुत ही कुशल और सॉफ्ट स्पोकन था। उन्होंने अपने पूरे राजनीतिक करियर में शायद ही कभी किसी व्यक्ति से ऊँची आवाज में बात की होगी। हम भी वर्ष 2012 से उनके साथ इस माननीय सदन के सदस्य हैं। अगर हमसे भी अपने व्यवहार में कोई त्रुटि होती थी तो वे हमें समझाते थे कि इस माननीय सदन में व्यवहार बिल्कुल प्रॉपर होना चाहिए। वे बहुत ही अच्छे समाजसेवी नेता थे और हमेशा अपने क्षेत्र की जनता की चिंता करते थे। इस माननीय सदन में वे हमेशा अपने क्षेत्र की आवाज उठाते थे। लेकिन अपने क्षेत्र की आवाज उठाने का जो उनका तरीका होता था, वह बहुत ही विनम्र होता था। वे हर बात को विनम्रता के साथ इस माननीय सदन में रखते थे। उन्होंने बहुत ही ईमानदारी और निष्ठा से समाज व अपने क्षेत्र की जनता की सेवा की है।

अध्यक्ष महोदय, इसके अलावा पूर्व सदस्य, स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी ने भी देश की सेना में अपनी सेवाएं दी हैं। इस मातृभूमि के लिए उनका काफी योगदान रहा है। उनके अंदर एक जज़्बा व जुझारूपन था। उन्होंने वर्ष 1962, 1965 व वर्ष 1971 की लड़ाइयां भी लड़ी हैं। इस मातृभूमि और देश के लिए उनका अमूल्य योगदान रहा है। वे भी इस माननीय सदन के पांच बार सदस्य रहे हैं। वे सबसे पहले वर्ष 1982 में विधायक बने थे और वर्ष 2003 में आखिरी बार इस माननीय सदन के सदस्य रहे। समाज सेवा में उनकी काफी रुचि थी। उन्होंने हमेशा गलत काम और भ्रष्टाचार का विरोध सामने से, नज़र-से-नज़र मिलाकर और हर प्लेटफॉर्म पर किया है। उन्होंने कभी भी गलत कार्यों और भ्रष्टाचार का साथ नहीं दिया, बल्कि हमेशा उनका विरोध करते थे।

**16.11.2026/1435/एच.के.-एन.जी./2**

अध्यक्ष महोदय, मैं इस शोकोद्गार के माध्यम से दोनों शोकाकुल परिवारों के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वे दोनों परिवारों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें और इन दोनों दिवंगत आत्माओं को ईश्वर अपने श्रीचरणों में स्थान दें। धन्यवाद।

**अध्यक्ष :** अब माननीय सदस्य, श्री केवल सिंह पठानिया अपने शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

**श्री केवल सिंह पठानिया** (उप-मुख्य सचेतक): अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता माननीय श्री सुखविन्दर सिंह सुक्खू इस माननीय सदन में शोकोद्गार प्रस्ताव लेकर आए हैं, उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। पिछले सत्र और इस सत्र के बीच माननीय सदस्य बड़े भाई आदरणीय स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी हमारे बीच से प्रभु के पास चले गए हैं। उनके बारे में जैसे कि सदन के नेता ने बताया कि उन्होंने बहुत ही ईमानदारी से आई0टी0बी0पी0 से अपना करियर शुरू किया था। वे एक छोटे से गांव के रहने वाले थे और उसके बावजूद भी उन्हें आई0टी0बी0पी0 में काम करने के साथ-साथ प्रधानमंत्री कार्यालय में भी काम करने का मौका मिला। बाद में वे वी0आर0एस0 लेकर आए। प्रदेश के अंदर व बाहर ऐसे बहुत से उदाहरण हैं कि लोग वी0आर0एस0 ले लेते हैं। लेकिन उसके बावजूद भी चार बार विधायक बनना, लोगों के बीच उनकी लोकप्रियता और समाज के प्रति तथा अपने विधान सभा क्षेत्र के प्रति उनके समर्पण का बहुत बड़ा उदाहरण है। आदरणीय स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी का अपने क्षेत्र के विकास में बहुत बड़ा योगदान था। इसके साथ-साथ वर्ष 1982-83 में जो एशियन गेम्स हुई थीं, उसमें उन्होंने एक अहम भूमिका अदा की थी। उसी तरीके से वर्ष 1983 में हमें जो नॉन-अलाइंड वर्ल्ड लीडर्स समिट (गुटनिरपेक्ष सम्मेलन) हुआ था, उसमें भी उनको जाने का मौका मिला था। वर्ष 1984 में जो राष्ट्रमंडल सम्मेलन हुआ था, उसमें भी हमारे स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी को शामिल होने का अवसर मिला था। वे एक ऐसी शख्सियत थे, जिन्होंने इस विधान सभा के सदस्य के रूप में चार बार रामपुर विधान सभा क्षेत्र का नेतृत्व किया। जब मैं ऑल इंडिया एन0एस0यू0आई0 का जनरल सक्रेट्री था और जब हम पार्लियामेंट में जाते थे, क्योंकि हम उस समय स्टूडेंट लीडर थे, तो उस समय अगर पास के लिए किसी को फोन करते थे ए0पी0 द्वारा.....जारी

**16.11.2026/1440/वाई0के0/ए0पी0/-01**

**शोकोद्गार जारी .....**

**श्री केवल सिंह पठानिया जारी .....**

रिसेप्शन के माध्यम से काफी देर इंतजार करने के बाद हमें पास प्राप्त होता था। जब भी विधान सभा के अंदर या बाहर उनसे बात होती थी, तो वे हमेशा अपने विधान सभा क्षेत्र से संबंधित मुद्दों को प्रमुखता से उठाते थे। इसके साथ-साथ मैं अपने ही विधान सभा क्षेत्र से संबंधित स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी का भी उल्लेख करना चाहूंगा, जो तियारा के रहने वाले थे। उन्होंने सेना में जाकर देश की सेवा की। उनका जन्म 23 नवंबर, 1938 को जिला कांगड़ा के तियारा में हुआ था। वर्ष 1962 में उन्होंने अपनी ट्रेनिंग पूरी की और उन्हें "स्वॉर्ड ऑफ ऑनर" से सम्मानित किया गया। वे कांगड़ा के भूतपूर्व सैनिकों के लिए भी एक प्रेरणा थे। उन्हें गोरखा राइफल्स में कमीशन मिला। इसके बाद उन्हें गोल्ड मेडल से भी सम्मानित किया गया। उन्होंने वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध, वर्ष 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध तथा वर्ष 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

वर्ष 1982 से उन्होंने लगातार मेरे विधान सभा क्षेत्र का नेतृत्व किया। उन्होंने अपना पहला चुनाव निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में लड़ा। इसके बाद वर्ष 1984 में हुए मध्यावधि चुनाव में वे कांग्रेस के विधायक के रूप में चुनकर आए। फिर उन्होंने जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। इसके बाद उन्होंने कांग्रेस पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा और विधायक के रूप में जीतकर आए। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस सरकार के दौरान उन्हें दो बार पर्यटन एवं कानून मंत्री के रूप में कार्य करने का अवसर मिला। इसके साथ-साथ, जब वे मेजर रैंक से सेवानिवृत्त हुए, तो उन्होंने जे.आर.डी. टाटा तथा एयर इंडिया में भी लगभग साढ़े तीन से चार वर्ष तक निजी क्षेत्र में नौकरी की। निजी क्षेत्र में नौकरी करने के बावजूद उन्होंने वर्ष 1982 में पहली बार अपने विधान सभा क्षेत्र शाहपुर से चुनाव लड़ा। अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों में रहने के बावजूद वे हमेशा अपने शाहपुर विधान सभा क्षेत्र के हितों की बात करते रहे।

मैं कहना चाहता हूं कि जिस तरह शाहपुर विधान सभा क्षेत्र से स्वर्गीय राणा कुलतार चंद जी को प्रथम स्पीकर के रूप में कार्य करने का अवसर मिला, उसी विधान

सभा क्षेत्र के स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी अपने क्षेत्र की बात को सदन में प्रखरता से रखने के लिए जाने जाते थे। वर्ष 1982 से लेकर वर्ष 2007 तक वे जिला कांगड़ा और प्रदेश की राजनीति में विधायक के रूप में सक्रिय रहे। विशेष रूप से भूतपूर्व सैनिकों के लिए उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है। वर्ष 1983 से लेकर वर्ष 2023 तक लगातार 40 वर्षों तक वे एक्स-सर्विसमैन लीग के अध्यक्ष रहे। वे सैनिकों की आवाज हमेशा सदन के अंदर और बाहर उठाते रहे। उन्हें जिला कांगड़ा का पहला परमवीर चक्र प्राप्त होने का गौरव हासिल हुआ है। जिला कांगड़ा के सैनिकों के सम्मान और अधिकारों के लिए भी वे लगातार अपनी आवाज उठाते रहे।

आज हिमाचल प्रदेश देश का पहला ऐसा प्रदेश है, जहां भूतपूर्व सैनिकों को वित्तीय लाभ के साथ-साथ पदोन्नति में भी लाभ मिलता है। उस समय, जब वे स्वयं भूतपूर्व सैनिक होने के साथ-साथ विधायक भी थे, प्रदेश में स्वर्गीय राजा वीरभद्र सिंह जी की सरकार थी और वे स्वयं कैबिनेट मंत्री थे। उस दौरान उन्होंने भूतपूर्व सैनिकों के अधिकारों के लिए जो लड़ाई लड़ी, उसका लाभ आज भी सैनिकों को मिल रहा है। आज भी हिमाचल प्रदेश में भूतपूर्व सैनिकों को मिलने वाली वरिष्ठता चर्चा का विषय रहती है। जब भी वरिष्ठता की बात होती है, तो वर्ष 1962, 1965 और 1971 के युद्धों में देश की सेवा करने वाले सैनिकों के योगदान की चर्चा होती है। सैनिकों और पैरामिलिट्री फोर्सेज के जवानों का जीवन आदेशों और अनुशासन पर आधारित होता है। जब भी उन्हें आदेश मिलता है, वे बिना किसी देरी के अपनी अगली जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार रहते हैं। चाहे अनंतनाग हो, मणिपुर हो या सिक्किम, उन्हें जहां भी तैनात किया जाता है, वे अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए वहां पहुंच जाते हैं। वे हमेशा देश की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

इसके साथ-साथ, स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी ने लंबे समय तक मेरे विधान सभा क्षेत्र शाहपुर के विकास के लिए भी संघर्ष किया। उस समय वहां कोई प्रशासनिक मुख्यालय नहीं था, केवल सब-तहसील हुआ करती थी। उन्होंने इस क्षेत्र में प्रशासनिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए लगातार प्रयास किए। चाहे धारकंडी का क्षेत्र हो, चंगर का क्षेत्र हो या मेरे विधान सभा क्षेत्र का कोई अन्य हिस्सा हो, उन्होंने हर क्षेत्र के विकास के लिए प्रयास किए। मैं चाहता हूं कि आने वाले समय में स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी ने अपने विधान सभा क्षेत्र के विकास के लिए जो

**16.11.2026/1440/वाई0के0/ए0पी0/-03**

रोडमैप तैयार किया था, उस पर लगातार काम किया जाए और मेरे विधान सभा क्षेत्र शाहपुर को आगे बढ़ाया जाए। मैं स्वयं उनके घर गया था। आप सभी माननीय सदस्य और माननीय अध्यक्ष महोदय भी उनके घर गए थे। जब मैं उनके परिवार के साथ लगभग एक से डेढ़ घंटे तक बैठा, तो मुझे उनके द्वारा अपने विधान सभा क्षेत्र के विकास के लिए तैयार किए गए रोडमैप को समझने का अवसर मिला। आज जब शाहपुर की जनता ने मुझे अपने विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने का अवसर दिया है, तो मैं यही कहना चाहूंगा कि स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि वे अपने विधान सभा क्षेत्र के विकास के लिए जो रोडमैप तय करके गए थे, मैं उसी के अनुसार आगे बढ़ूंगा।

श्री ए0टी0 द्वारा जारी .....

**16.11.2026/1445/AT/YK/01**

**शोकोद्गार जारी....**

**श्री केवल सिंह पठानिया जारी...**

मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी तथा स्वर्गीय श्री नंद लाल जी, जो हमारे सदन के सदस्य रहे हैं के निधन पर मुझे अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया। मैं भी इस शोक प्रस्ताव के साथ स्वयं को शमिल करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारों को इस दुःख की घड़ी में हिम्मत दे और वह हिम्मत के साथ आगे बढ़ें। विशेष रूप से मैं माननीय नेता प्रतिपक्ष द्वारा सदन में व्यक्त की गई संवेदनाओं को भी उनके परिवारों तक पहुंचाना चाहता हूं। आपने मुझे इस शोकोद्गार में बोलने का मौका दिया, मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूं।

**अध्यक्ष :** माननीय श्री विपिन सिंह परमार जी ।

**श्री विपिन सिंह परमार :** माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सदन में स्वर्गीय मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी तथा स्वर्गीय श्री नंद लाल जी, सदस्य हिमाचल प्रदेश विधान सभा के निधन पर जो शोकोद्गार प्रस्ताव लाया गया है, मैं भी स्वयं को उस में शमिल करता हूं।

मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी के साथ हमारा लंबे समय से संबंध रहा है। वे चाहे किसी भी राजनीतिक दल में रहे हों, उनके साथ हमारे संबंध और सामाजिक सरोकार सदैव बने रहे तथा उनसे हमें निरंतर प्रेरणा मिलती रही। 87 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया। उनके निधन से कुछ महीने पहले जब मैं उनसे मिला था तब ऐसा बिल्कुल नहीं लग रहा था कि कुछ ही महीनों बाद वे इस संसार को छोड़ देंगे। उनके चेहरे पर जो चमक थी उनके संस्कार और व्यवहार तथा उनके व्यक्तित्व में जो स्फूर्ति थी उसे देखकर ऐसा लगता था कि वे लंबे समय तक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपनी सेवाएं देते रहेंगे।

अध्यक्ष महोदय, उन्होंने शिमला के प्रतिष्ठित बिशप कॉटन स्कूल से शिक्षा प्राप्त की। पढ़ाई पूरी करने के बाद वे इंडियन मिलिट्री अकादमी (IMA) में अधिकारी के रूप में



प्रशिक्षण लेने गए। माननीय सदस्यों ने भी यहां उनके जीवन से जुड़ी अनेक उपलब्धियों का उल्लेख किया है।

जब आई0एम0ए0 में किसी प्रशिक्षु को प्रशिक्षण दिया जाता है तो पूरे प्रशिक्षण दल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रशिक्षु को सम्मानित किया जाता है। यह आई0एम0ए0 का सर्वोच्च सम्मान माना जाता है जिसे 'स्वॉर्ड ऑफ ऑनर' कहा जाता है। उन्हें इस प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजा गया था। यदि हम स्वॉर्ड ऑफ ऑनर के महत्व और इसे प्राप्त करने की योग्यता पर गौर करें, तो हमें उनकी बुद्धिमत्ता, तीव्रता और सक्रियता का परिचय मिलता है।

इन्हीं विशेषताओं के कारण जब वे राजनीतिक क्षेत्र में आए, तो उन्होंने अपनी एक अलग पहचान बनाई। चाहे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बात हो या बाद में वैचारिक मतभेदों के कारण किसी अन्य राजनीतिक दल में जाने की बात हो, उन्होंने वर्ष 1982 में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में अपना पहला चुनाव जीता था। जब भी उनसे हमारी मुलाकात होती थी तो वे अक्सर कहते थे "परमार साहब, ईश्वर ने मुझे सेना में सामाजिक क्षेत्र में और राजनीतिक क्षेत्र में सेवा करने का अवसर दिया है। ये पद और जिम्मेदारियां स्थायी नहीं हैं, बल्कि अस्थायी हैं। ये आती हैं और चली जाती हैं। वे बार-बार इन शब्दों को दोहराते थे। परंतु जिन जिम्मेदारियों को हम अपने जीवन में निभाते हैं

**श्री टी0सी0वी0 द्वारा जारी .....**

**16.11.2026/1450/टी0सी0वी0/ए0जी0-1**
**श्री विपिन सिंह परमार..... जारी**

उन्हें कर्म के रूप में निभाना चाहिए ताकि हमें वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियां भी याद रखें। मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी के देहांत के बाद यह बात अवश्य ध्यान में आई कि कौन उनसे मोहताज नहीं था? ऐसा इसलिए था क्योंकि वे अच्छे लेखक थे और अच्छे वक्ता भी थे। वे एक बात हमेशा कहते थे कि प्रशासन के साथ जनप्रतिनिधि का अच्छा संबंध होना चाहिए। हम विधान सभा में कानून बनाते हैं, प्रस्ताव लाते हैं और चर्चा करते हैं लेकिन उन्हें धरातल पर उतारने का काम प्रशासन करता है। उनके कहे हुए वे शब्द आज भी हमारे कानों में गूंजते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी की पहचान एक लेखक के रूप में भी रही है। वे पहली बार वर्ष 1982 में विधायक बने और उसके बाद दोबारा विधायक तथा मंत्री भी बने। इसके साथ-साथ वे हमेशा सैनिकों के वेलफेयर की बात करते रहे और 'वन रैंक वन पेंशन' जैसे मुद्दों पर अपना पक्ष रखते रहे। वे सैनिक कल्याण के लिए निरंतर प्रयासरत रहे। वे लगभग 14 बार सेवानिवृत्त सोल्जर लीग के अध्यक्ष बने और इस माध्यम से उन्होंने समाज की सेवा की। मैं ऐसी महान विभूति के चरणों में नमन करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, उनका सबसे बड़ा टकराव क्षेत्रीय असंतुलन को लेकर रहता था। उनका स्पष्ट मत था कि प्रदेश में क्षेत्रीय असंतुलन बिल्कुल नहीं होना चाहिए और पूरे प्रदेश को एक ही नजरिए से देखा जाना चाहिए। यह भी उनके टकराव का एक बहुत बड़ा मुद्दा रहा लेकिन वे बेबाक टिप्पणी करने वाले व्यक्ति थे। जो बात कहते थे, मुंह पर कहते थे और अपने विषय को तथ्यों के आधार पर रखते थे।

अध्यक्ष महोदय, ऐसी महान विभूति का जन्म वर्ष 1938 में हुआ था और दिनांक 29 सितंबर, 2026 को 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ। मैं उनके घर गया था और उन्होंने मुझे दो किताबें भेंट कीं। एक किताब का नाम *The Pattern of Destiny* था और दूसरी किताब *Turmoil* थी। जब मैंने उन किताबों को पढ़ा तो उनमें उनके जीवन के बहुत



से प्रेरणादायक प्रसंगों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त एक किताब 'Upheaval' नाम से भी उन्होंने लिखी थी। उन्हें किताबें लिखने का बहुत शौक था।

अध्यक्ष महोदय, मैं यही कहना चाहता हूं कि ऐसे व्यक्ति आज हमारे बीच में नहीं हैं जो शाहपुर विधान सभा क्षेत्र के गांव त्यारा से पांच बार जनप्रतिनिधि के रूप में इस विधान सभा में भाग लेते रहे तथा शाहपुर, जिला कांगड़ा व हिमाचल प्रदेश की आवाज बनकर वहां के मुद्दों को उठाते रहे। मैं उनके चरणों में नमन करता हूं और श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। ईश्वर शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, मैं ऐसी कामना करता हूं और मैं भी अपने आपको इस शोक प्रस्ताव में शामिल करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, दूसरे इसी विधान सभा के सदस्य श्री नन्द लाल जी का भी हाल ही में देहांत हुआ है। अन्य माननीय सदस्यों ने भी उनके जीवन के बारे में यहां विस्तार से उल्लेख किया है। वे अर्धसैनिक बल, आई0टी0बी0पी0 में भी रहे और वहां से उन्हें एस0पी0जी0 में सेवाएं देने का अवसर मिला। उन्हें देश के प्रधानमंत्री के साथ रहने का भी अवसर मिला।

**एन0एस0 द्वारा ... जारी**

शोकोद्गार -----जारी

श्री विपिन सिंह परमार-------जारी

उनके कार्यों के लिए उन्हें पुरस्कृत भी किया गया और नवाजा भी गया। श्री नन्द लाल जी व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। इस विधान सभा में जब अलग-अलग विषयों पर उन्हें चर्चाओं में हिस्सा लेते हुए सुना और देखा तो ऐसा लगता था कि वे हर विषय पर पूरी जानकारी के बाद ही अपनी बात रखते थे और बड़े विस्तार से विषय रखते थे। ऐसे व्यक्ति का लंबी बीमारी के बाद जाना और आज हमारे बीच न होना बहुत दुखद है। वे मृदुभाषी, सहनशील और मिलनसार व्यक्ति थे तथा 4 बार रामपुर विधान सभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं और आज वे हमारे बीच नहीं हैं। मैं उनके चरणों में नमन करते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। इस माननीय सदन के दोनों सदस्य श्री विजय सिंह मनकोटिया जी जिनको मेजर साहब के नाम से जाना जाता था और श्री नन्द लाल जी जो इसी विधान सभा के माननीय सदस्य थे, उनके शोकोद्गार प्रस्ताव में मैं अपने आपको शामिल करता हूं। ईश्वर शोक संतप्त परिवारों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। इसी प्रस्ताव के माध्यम से मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

**अध्यक्ष :** अब श्री मोहन लाल ब्राक्टा जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

**श्री मोहन लाल ब्राक्टा :** अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री जी ने जो शोकोद्गार प्रस्ताव स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया, पूर्व सदस्य एवं स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी जो हमारे वर्तमान सदस्य थे, के प्रति रखा है, मैं भी उसमें अपने आपको शामिल करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक श्री नन्द लाल जी की बात है, वैसे तो मेरे से पूर्व वक्ताओं ने उनके बारे में काफी विस्तार से बातें की हैं। मेरा उनके साथ जो अपना एक्सपीरियंस है उसको साझा करना चाहता हूं। मैं वर्ष 2012 में पहली बार इस विधान सभा का सदस्य बना और वे वर्ष 2007 में पहली बार सदस्य बने थे। मुझे वर्ष 2007 और 2012 के बीच कई बार उनसे मिलने का मौका मिला। मैं जब भी उनसे मिलने जाता था तो वे उसी प्रकार से व्यवहार करते थे जैसे मैं उनका छोटा भाई हूं। जहां तक वर्ष 2012 के बाद की बात है तो उस समय वे भी दूसरी बार विधायक बने और मैं पहली बार

16-11-2026/1455/NS-AG/2

विधायक बना। जब हमारा पहला शपथ ग्रहण समारोह तपोवन, धर्मशाला में हुआ तो पहले ही दिन मेरी उनसे मुलाकात हुई और उसके बाद लगातार मुलाकातें होती रहीं। जैसा कि मेरे से पूर्व वक्ताओं ने भी कहा कि वे अपना समय बिल्कुल व्यर्थ की बातों में व्यतीत नहीं करते थे। यह मैंने भी देखा है। वे अनुशासन के बड़े पक्के थे। अगर उन्हें 7 बजे जाना है तो 7 बजे ही जाएंगे। वे अनुशासन के इतने पक्के थे कि कई बार मुझे भी छोटा भाई समझकर कई बार डांटते थे।

अध्यक्ष महोदय, जहां तक इस माननीय सदन की बात है तो वे यहां बहुत महत्वपूर्ण विषय रखते थे, चाहे विपक्ष की बात हो या सत्ता पक्ष की हो। वे जब विपक्ष में थे या जब सत्ता पक्ष में थे तो मैंने किसी भी माननीय सदस्य को उनकी बात को बीच में इंटरप्ट करते हुए नहीं देखा। यह बहुत बड़ी बात है। वैसे तो हमारी आपस में नोक-झोंक चलती रहती है, हम एक-दूसरे पर छींटाकशी और ताने भी मारते हैं लेकिन जब कभी वे अपनी बात रखते थे तो पूरी जानकारी के साथ रखते थे। बजट भाषण और प्रश्न काल के दौरान सभी माननीय सदस्य उन्हें बहुत ध्यान से सुनते थे। यह भी एक बहुत महत्वपूर्ण बात थी। जैसा कि मेरे से पूर्व वक्ताओं ने कहा कि वे पहली बार वर्ष 2007 में रामपुर विधान सभा क्षेत्र से चुने गए थे। उसके बाद वर्ष 2012, वर्ष 2017 और वर्ष 2022 में चौथी बार चुने गए थे। वे लगातार चार बार जीते।

आर0के0एस0 द्वारा-------जारी

16.11.2026/1500/RKS/AS-1

शोकोद्गार जारी....

श्री मोहन लाल ब्राक्टा जारी...

ऐसे मौके भी सभी सदस्यों को नहीं मिलते हैं। हालांकि कई सदस्य लगातार 6-7 बार भी चुनकर आए हैं लेकिन ऐसे अवसर सभी को प्राप्त नहीं होते। दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी ने आई0टी0बी0पी0 में 27 वर्षों तक अपनी सेवाएं दीं। वर्ष 2007 में जब उन्होंने वी0आर0एस0 ली तो उस समय वे आई0टी0बी0पी0 में डी0आई0जी0

के महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे। उनका जन्म 16 अप्रैल, 1954 को देवठी गांव में हुआ था जो रामपुर से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। उनका देहांत 3 नवम्बर, 2026 को 72 वर्ष की आयु में हुआ। अध्यक्ष महोदय, जब वे बीमार थे तो मैं कई बार उनसे मिलने अस्पताल भी गया और कई बार उनके घर भी गया। इसके अतिरिक्त टेलीफोन पर भी उनसे बातचीत होती रहती थी। शुरू-शुरू में उन्हें लगता था कि वे ठीक हो जाएंगे और वे कहते थे कि मैं ठीक हो जाऊंगा। उनके निधन से कुछ दिन पहले लगभग 18 या 19 अक्तूबर को मैंने उन्हें टेलीफोन किया और उनका हालचाल पूछा। उस समय उन्होंने धीमी आवाज में कहा कि अब स्थिति ठीक नहीं लग रही है। इसके पश्चात 3 नवम्बर को उनका निधन हो गया। अब उनके परिवार में उनकी पत्नी, बेटा और बहू है।

अध्यक्ष महोदय, मेज़र विजय सिंह मनकोटिया जी के साथ मेरा इतना अधिक संपर्क या परिचय नहीं रहा और न ही उनसे ज्यादा बातचीत रही। फिर भी मैं उन्हें जानता था। वे बहुत अच्छे और बड़ी शख्सियत थे। वे इस माननीय सदन के 5 बार सदस्य रहे। वे दो बार मंत्री भी रहे। मैं स्वर्गीय मेज़र विजय सिंह मनकोटिया और स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी की आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना करता हूं और ईश्वर से कामना करता हूं कि उनके परिवारों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। अध्यक्ष महोदय, मैं भी स्वयं को इस शोकोद्गार में अपने आपको शामिल करता हूं। धन्यवाद। जय हिन्द।

**अध्यक्ष :** अब माननीय सदस्य डॉ0 हंस राज जी अपने शोकोद्गार प्रस्तुत करेंगे।

**डॉ0 हंस राज :** अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री और नेता प्रतिपक्ष द्वारा जो इस माननीय सदन में शोकोद्गार प्रस्तुत किए गए हैं, मैं भी अपने आपको इसमें शामिल

16.11.2026/1500/RKS/AS-1

करता हूं। मेजर विजय सिंह मनकोटिया और श्री नन्द लाल जी इस माननीय सदन के लगातार कई बार सदस्य रहे हैं। मेजर विजय सिंह मनकोटिया जी से मेरा बहुत अधिक संपर्क नहीं रहा लेकिन गाहे-बगाहे कई बार एयरपोर्ट पर या कई बार शाहपुर में उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे अद्वितीय शख्सियत थे। चूंकि ये दोनों ही शख्सियत रक्षा बलों से संबंधित रहे हैं इसलिए एक राजनेता और समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व के रूप में

उनके प्रति हमारे मन में विशेष आदर और सम्मान रहा है। उनके द्वारा समाज के लिए किए गए कार्यों से भी हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। जब से मैं विधान सभा का सदस्य बना हूं, श्री नन्द लाल जी को मैंने वर्ष 2012 से बहुत नजदीक से देखा है। मैं चुराह विधान सभा क्षेत्र से आता हूं। जब वे आई0टी0बी0पी0 में कार्यरत थे उस समय हमारे क्षेत्र के कई लोग वहां से सेवानिवृत्त होकर आए थे। मुझे अपने मामा प्रमोद जी का एक महत्वपूर्ण वाक्य याद आता है। वे उनके साथ नौकरी करते थे। जब श्री नन्द लाल जी दूसरी बार विधायक बनकर आये थे तो उस समय उन्होंने कहा कि मुझे एक बार श्री नन्द लाल जी से मिलाना क्योंकि मैं उनके अधीनस्थ कार्य कर चुका हूं। वे बहुत ही शानदार व्यक्तित्व के धनी हैं। हम स्वयं भी पिछले लगभग 3 कार्यकाल से यहां सदन में हैं। इस दौरान उनके साथ विभिन्न विषयों पर विचारों का आदान-प्रदान करने और उनके जीवन के अनुभवों को जानने का अवसर मिला। विशेष रूप से रक्षा सेनाओं में रहते हुए उन्होंने जो अनुभव अर्जित किए और उनसे जो सीख प्राप्त की, उससे हमें भी बहुत कुछ सीखने को मिला। आज सदन में शोकोद्गार हो रहा है और इसमें अनेक माननीय सदस्यों ने भाग लिया है। मेरा मानना है कि शोकोद्गार का अर्थ केवल खड़े होकर औपचारिकता निभाना नहीं होता है। इसका अर्थ है कि हमने अपने उस साथी को खोया है जो लंबे समय तक हमारे साथ रहा है। मुझे यह कहते हुए बहुत अफसोस हो रहा है कि इस सदन में कई बार श्री विनय कुमार जी को भी टोका गया। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां किसी को इस बात की परवाह नहीं है कि कौन यहां से चला गया। हमें यह भी सोचना चाहिए कि कल हम लोग भी इस माननीय सदन से चले जाएंगे। इस सदन से बहुत सारे लोग निकल भी गए हैं।

श्री बी0एस0द्वारा जारी

16.11.2026/1505/बी.एस./ए.एस.-1

डॉ0 हंस राज जारी...

लेकिन जब सदन में इस तरह का व्यवहार होता है तो व्यक्ति को लगता है कि शायद मैं ही यहां चिरंजीवी रहूंगा और इसी माननीय सदन में लगातार बना रहूंगा। जबकि सच्चाई यह है कि कल सबने यहां से जाना है लेकिन हम सबका यह दायित्व है कि हम केवल 2 मिनट का मौन रखकर या अपने विचार व्यक्त करके ही अपनी जिम्मेदारी पूरी न समझें। जिन

दिवंगत सदस्यों का प्रदेश और समाज के लिए इतना बड़ा योगदान रहा है उनके प्रति सम्मान प्रकट करना भी हमारा दायित्व है। मुझे वास्तव में इस बात का अफसोस है कि मैं काफी देर से यह देख रहा हूं। आपके बार-बार टोकने के बावजूद भी बहुत सारे सदस्य अपने-अपने कार्यों में अनावश्यक रूप से व्यस्त हैं। मुझे लगता है कि सदन में इस तरह का व्यवहार नहीं होना चाहिए।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि इन दोनों दिवंगत आत्माओं को शांति प्रदान करें और उनके परिवारों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने का पूरा हौसला दें। हमारी ओर से भी इन परिवारों के प्रति जो संवेदनाएं हैं वे उन तक पहुंचनी चाहिए। आदरणीय श्री नन्द लाल जी अनुसूचित जाति से संबंध रखते थे वे हमें अलग-अलग परिस्थितियों में और अलग-अलग पहलुओं पर मार्गदर्शन देते थे। इसलिए मैं उनके परिवार के प्रति विशेष रूप से अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। अध्यक्ष महोदय आपने मुझे समय दिया आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

16.11.2026/1505/बी.एस./ए.एस.-2

**अध्यक्ष :** अब राजस्व मंत्री जी शोकोद्गार में भाग लेंगे।

**राजस्व मंत्री :** अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी और स्वर्गीय मेजर श्री विजय सिंह मनकोटिया जी के निधन पर मुख्य मंत्री जी द्वारा जो शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया है उसमें मैं भी अपने आपको शामिल करता हूं। मैं इन दोनों दिवंगत माननीय सदस्यों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और इनके परिवारों के प्रति भी अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करता हूं। इन दोनों की जीवनी के बारे में यहां मुझसे पूर्व सदस्यों ने बड़े विस्तार से अपनी बात रखी है। लेकिन इन दोनों के जीवन और इनकी कार्यशैली में काफी समानता रही है।

सबसे पहली बात यह है कि दोनों अनुशासित बलों से आए थे। दोनों ने स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति लेकर राजनीति में कदम रखा। राजनीति में भी दोनों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मैं कह सकता हूं कि ये दोनों ऐसे राजनेता रहे जिन्होंने हमेशा अनुशासन में रहकर अपनी राजनीतिक जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। इनसे हमें अनुशासन में रहकर

राजनीति करने की सीख लेने की आवश्यकता है। जहां तक श्री नन्द लाल जी का सवाल है जब उन्होंने पहली बार चुनाव लड़ा उस समय मुझे भी उनके निर्वाचन क्षेत्र में काम करने का अवसर मिला। उस समय मेरे मन में यह विचार आया कि आई0टी0बी0पी0 में डी0आई0जी0 के पद पर रहने के बाद वे आम लोगों के साथ किस प्रकार उठेंगे-बैठेंगे और उनके बीच कैसे काम करेंगे लेकिन जैसे-जैसे चुनाव के दौरान उनके साथ आगे बढ़ने का अवसर मिला तो मुझे महसूस हुआ कि उनका स्वभाव कितना सरल था। वे एक विशेष इच्छा और उद्देश्य लेकर राजनीति में आए थे। उनकी इच्छा थी कि अपने निर्वाचन क्षेत्र में अपने तरीके से लोगों के विकास के लिए काम कर सकें। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अनुसूचित जाति के एक परिवार से संबंध रखते थे। वे एक दूरदराज के गांव से आए थे और उनका परिवार भी बहुत अधिक संपन्न नहीं था। इसके बावजूद उन्होंने अपने जीवन में जो मुकाम हासिल किया वह अपने आप में उदाहरणीय है। उन्होंने आई0टी0बी0पी0 में रहते हुए 2 बार प्रेसिडेंट मेडल प्राप्त हुए और बार-बार वी0आई0पी0 ड्यूटी की जिम्मेदारी मिलती थी। चाहे प्रधानमंत्री हों या उप प्रधानमंत्री अथवा अन्य बड़े-बड़े आयोजन हों। ऐसे



महत्वपूर्ण अवसरों पर उनकी ड्यूटी लगना अपने आप में गर्व की बात है। मुझे भी लंबे समय तक उनके साथ काम करने का अवसर मिला। उनकी कार्यशैली जिस प्रकार की थी उससे मैं वास्तव में बहुत प्रभावित हूं।

इसी प्रकार मेजर श्री विजय सिंह मनकोटिया जी के साथ भी काम करने का अवसर मिला। वे भी एक उत्कृष्ट सैनिक थे। जैसा कि अभी श्री परमार साहब ने कहा कि आई0एम0ए0 में 'Sword of Honour' और 'Gold Medal' प्राप्त करना अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने भी पूरे गर्व के साथ देश में हिमाचल प्रदेश का नाम रोशन किया। इसके साथ-साथ उन्होंने पूर्व सैनिकों के कल्याण के लिए भी बहुत काम किया। जब वे इस माननीय सदन में अपनी बात रखते थे तो वास्तव में हमें महसूस होता था कि कांगड़ा क्षेत्र से एक बुलंद आवाज सदन में उठ रही है। मैं इन दोनों दिवंगत सदस्यों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, धन्यवाद।

अध्यक्ष : ....श्री डी0टी0 द्वारा जारी.....

**16.11.2026/1510/DT/DC-1**

**शोाकोदगार जारी..**

**अध्यक्ष :** मैं भी मुख्य मंत्री जी द्वारा लाए गए शोकौद्गार प्रस्ताव में अपने आपको शामिल करता हूं। चूंकि दोनों ही माननीय सदस्य काफी लंबे समय तक इस माननीय सदन के सदस्य रहे हैं और मुझे भी दोनों माननीय सदस्यों के साथ इस माननीय सदन में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस माननीय सदन ने दोनों माननीय सदस्यों के प्रति जो संवेदनाएं प्रकट की हैं वे बिल्कुल निष्पक्ष एवं उचित हैं। उनके व्यवहार और व्यक्तित्व के अनुरूप ही यहां सभी माननीय सदस्यों ने अपने-अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है। मैं भी अपने आपको इस शोकौद्गार प्रस्ताव में शामिल करता हूं। स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी का जन्म दिनांक 16 अप्रैल, 1954 को स्वर्गीय श्री प्यारे लाल जी के घर गांव, देवठी, रामपुर बुशहर, जिला शिमला में हुआ था। स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी ने आई0टी0बी0पी0 अकादमी में प्रशिक्षण प्राप्त करने के तुरंत बाद आई0टी0बी0पी0 के कमांडो दल में अपनी सेवाएं प्रारम्भ कीं। उन्होंने वर्ष 1982 में एशियाई खेलों और वर्ष 1983 में गुटनिरपेक्ष सम्मेलन तथा वर्ष 1984 में राष्ट्रमंडल सम्मेलन जैसी अंतर्राष्ट्रीय योजनाओं में भाग लिया। वर्ष 1985 में एस0पी0जी0 में कार्यरत रहते हुए उन्होंने प्रधान मंत्री एवं पूर्व प्रधानमंत्रियों की सुरक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हें उत्कृष्ट सेवाओं के लिए पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी एवं स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर तथा माननीय उप-प्रधान मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी जी द्वारा भी प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के अत्यधिक उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में आई0टी0बी0पी0 बटालियन की कमान संभाली। वर्ष 2001 में उन्हें उग्रवाद के विरुद्ध लड़ाई एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए दो बार राष्ट्रीय पुलिस पदक से सम्मानित किया गया। अरुणाचल प्रदेश सरकार द्वारा भी उन्हें राज्य की सुरक्षा एवं विकास में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। वर्ष 2007 में केंद्रीय सरकारी सेवा से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के उपरांत उन्होंने जनसेवा के उद्देश्य से राजनीति में प्रवेश किया। स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी वर्ष 2007, 2012, 2017 एवं 2022 में इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए। वे 13 मई, 2013 से 20 दिसंबर, 2017 तक मुख्य संसदीय सचिव रहे। उनकी समाज सेवा में विशेष रुचि थी और वे सदैव निष्ठा, ईमानदारी एवं जनसेवा के प्रतीक रहे। स्वर्गीय श्री नन्द लाल जी का निधन दिनांक 03 नवंबर, 2026 को 72 वर्ष की आयु में हुआ।

**16.11.2026/1510/DT/DC-2**

इसी प्रकार हमारे पूर्व माननीय सदस्य स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया जी का जन्म दिनांक 23 नवंबर, 1938 को स्वर्गीय श्री ओंकार सिंह ठाकुर जी के घर ग्राम त्यारा, जिला कांगड़ा में हुआ था।

वर्ष 1960 में श्री विजय सिंह मनकोटिया का भारतीय सैन्य अकादमी के लिए चयन हुआ। वर्ष 1962 में विशिष्ट कार्य निष्पादन एवं योग्यता के लिए उन्हें 'Sword of Honour' and 'Gold Medal' which is the highest Honour in trainning in Indian Miltary Academy (IMA) के साथ सेना में नियुक्त हुए। उन्होंने वर्ष 1962 के भारत-चीन युद्ध तथा वर्ष 1965 और 1971 में पाकिस्तान के विरुद्ध हुए युद्धों में गोरखा रेजिमेंट के साथ सेवाएं दीं। उस समय वे गोरखा रेजिमेंट की कमान संभाल रहे थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने रॉयल भूटान आर्मी के साथ भूटान में 4 वर्ष तक सेवाएं दीं। उन्होंने वर्ष 1976 में भारतीय सेना से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। स्वर्गीय श्री विजय सिंह मनकोटिया वर्ष 1982, 1985, 1990, 1993 और 2003 में 5 बार इस माननीय सदन के सदस्य निर्वाचित हुए। वे वर्ष 1995 से 1998 तक तथा मार्च 2003 से जुलाई 2004 तक पर्यटन,

**श्री एन0जी0 द्वारा जारी...**

**16.11.2026/1515/डी.सी.-एन.जी./1**

**अध्यक्ष..... जारी**

नागरिक उड्डयन व विधि मंत्री के पद पर आसीन रहे। उनकी समाज सेवा में विशेष रूची थी। वे सदा निष्ठा, ईमानदारी और जनसेवा के प्रतीक रहे। दुःख की बात है कि दिनांक 29 सितंबर, 2026 को अचानक 87 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। मैं इस माननीय सदन की ओर से दिवंगत आत्माओं की शांति की कामना करता हूं और सदन की भावनाओं को उनके परिवारजनों तक पहुंचा दिया जाएगा।

अब मैं सभा मण्डप में उपस्थित सभी माननीय सदस्यों से आग्रह करूंगा कि वे दिवंगत आत्माओं को श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षणों के लिए मौन खड़े हो जाएं।

**(सभामण्डप में उपस्थित सभी अपने-अपने स्थान पर कुछ क्षणों के लिए मौन खड़े हुए।)**

जैसाकि सभी माननीय सदस्यों को मालूम है कि इस माननीय सदन की यह परंपरा रही है कि जब भी कभी किसी सिटिंग माननीय सदस्य का निधन होता है, तो उस दिन की कार्यवाही स्थगित कर दी जाती है। उसी के अनुरूप आज की जो कार्यसूची है, प्रश्नकाल को छोड़कर शेष सारी कार्यसूची अगले कल के लिए लिस्टिड की जाती है।

अब इस माननीय सदन की बैठक मंगलवार दिनांक 17 नवम्बर, 2026 के 11:00 बजे पूर्वाह्न तक के लिए स्थगित की जाती है। धन्यवाद।

**धर्मशाला (तपोवन)-176215** **(यशपाल शर्मा)**
**दिनांकः 16 नवम्बर, 2026** **सचिव।**